The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 3 | March 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

आधुनिकता के युग में जनजातीय संस्कृति के समक्ष चुनौतियाँ

डॉ. विमला सिंह

सहायक प्राध्यापक, समाजषास्त्र, कमला नेहरु महाविद्यालय, कोरबा (छ.ग.), vimlas835@gmail.com

रमन कुमार जोषी

शोधार्थी–समाजशास्त्र, शास.ई.वि.स्ना. महाविद्यालय, कोरबा (छ.ग.), Rmnjoshi8775@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19542757

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 28-03-2026

Published: 10-04-2026

Keywords:

आधुनिकता, जनजातीय संस्कृति, सांस्कृतिक परिवर्तन, अस्मिता, सामाजिक परिवर्तन

ABSTRACT

आधुनिकता ने भारतीय समाज के सभी वर्गों को गहराई से प्रभावित किया है और जनजातीय समाज भी इससे अछूता नहीं रहा है। परंपरागत रूप से जनजातीय संस्कृति प्रकृति–आधारित जीवन–शैली, सामुदायिक व्यवस्था, मौखिक परंपराओं, लोककला, रीति–रिवाजों और सामूहिक चेतना पर आधारित रही है। किंतु औद्योगीकरण, शहरीकरण, वैश्वीकरण, औपचारिक शिक्षा, बाजारवाद तथा डिजिटल तकनीक के प्रसार ने जनजातीय समाज की सांस्कृतिक संरचना में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य आधुनिकता के संदर्भ में जनजातीय संस्कृति के समक्ष उभरती प्रमुख चुनौतियों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है तथा वर्णनात्मक–विश्लेषणात्मक पद्धति को अपनाता है। साहित्य समीक्षा के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि आधुनिकता ने जहाँ एक ओर जनजातीय समाज को शिक्षा, जागरूकता और नए अवसर प्रदान किए हैं, वहीं दूसरी ओर सांस्कृतिक क्षरण, अस्मिता संकट, सामाजिक संबंधों में परिवर्तन तथा पारंपरिक मूल्यों के ह्रास जैसी गंभीर समस्याएँ भी उत्पन्न की हैं। अध्ययन का निष्कर्ष यह संकेत देता है कि जनजातीय संस्कृति के संरक्षण और समावेशी विकास के बीच संतुलन स्थापित करना समय की आवश्यकता है।

Introduction

भारत एक बहुसांस्कृतिक और बहुजातीय समाज है, जिसमें जनजातीय समुदायों का विशेष स्थान है। जनजातीय समाज भारतीय सभ्यता की प्राचीनतम परतों का प्रतिनिधित्व करता है। उनकी जीवन–शैली, सामाजिक संगठन,

धार्मिक विश्वास, लोककला और सांस्कृतिक परंपराएँ प्रकृति के साथ सामंजस्य पर आधारित रही हैं। लंबे समय तक जनजातीय समाज मुख्यधारा से अपेक्षाकृत अलग–थलग रहा, जिससे उनकी सांस्कृतिक विशिष्टता बनी रही।बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से भारत में आधुनिकता की प्रक्रिया तेज़ हुई। औद्योगीकरण, शहरीकरण, शिक्षा का प्रसार, संचार माध्यमों का विकास और वैश्वीकरण ने सामाजिक–आर्थिक संरचना को बदल दिया। जनजातीय समाज भी इन परिवर्तनों से प्रभावित हुआ। आधुनिकता ने जनजातीय जीवन में नए अवसरों के द्वार खोले, किंतु इसके साथ–साथ उनकी सांस्कृतिक जड़ों पर दबाव भी बढ़ा।समाजशास्त्रीय दृष्टि से आधुनिकता केवल तकनीकी प्रगति नहीं है, बल्कि यह सोच, मूल्य, व्यवहार और सामाजिक संबंधों में परिवर्तन की प्रक्रिया है। जनजातीय समाज में यह परिवर्तन अपेक्षाकृत तीव्र और असंतुलित रहा है। परिणामस्वरूप जनजातीय संस्कृति के समक्ष अनेक चुनौतियाँ उभर कर सामने आई हैं, जैसेकृपारंपरिक सांस्कृतिक प्रथाओं का ह्रास, भाषा का लोप, अस्मिता का संकट, सामुदायिकता का क्षरण और उपभोक्तावादी जीवन–शैली का प्रभाव।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य इन्हीं सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तनों और चुनौतियों का गहन समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है।

Review of Literature

Xaxa (2019) ने जनजातीय समाज और विकास के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करते हुए बताया कि आधुनिकता ने जनजातीय समुदायों के लिए अवसर और संकट दोनों उत्पन्न किए हैं। उनके अनुसार, विकास की नीतियाँ यदि सांस्कृतिक संदर्भों की अनदेखी करती हैं, तो वे सांस्कृतिक विस्थापन को जन्म देती हैं।

Betel A. (2018) ने सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में यह तर्क प्रस्तुत किया कि आधुनिकीकरण पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं को कमजोर करता है। जनजातीय समाज में इसका प्रभाव सामुदायिक मूल्यों के क्षरण और व्यक्तिवाद के बढ़ते प्रभाव के रूप में देखा जा सकता है।

Kujur and Minz (2020) ने मध्य भारत के जनजातीय क्षेत्रों में औद्योगीकरण के प्रभावों का अध्ययन किया। उनके शोध से स्पष्ट होता है कि औद्योगिक विकास और शहरी संपर्क ने जनजातीय युवाओं की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को प्रभावित किया है, विशेषकर भाषा, पहनावे और पारंपरिक रीति–रिवाजों के संदर्भ में।

Sahoo (2021) ने डिजिटल मीडिया के प्रभावों पर केंद्रित अध्ययन में पाया कि सोशल मीडिया जनजातीय युवाओं के लिए सूचना और जागरूकता का माध्यम बन रहा है, किंतु इसके साथ–साथ उपभोक्तावाद और सांस्कृतिक अनुकरण (cultural imitation) को भी बढ़ावा दे रहा है।

Government of India (2022) की जनजातीय विकास रिपोर्ट यह स्वीकार करती है कि आधुनिक विकास परियोजनाओं और शहरीकरण ने जनजातीय समाज की सांस्कृतिक संरचना को प्रभावित किया है और नीति–निर्माण में सांस्कृतिक संरक्षण को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है।

इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिकता का जनजातीय संस्कृति पर प्रभाव बहुआयामी है। यद्यपि इस विषय पर शोध उपलब्ध है, फिर भी समग्र समाजशास्त्रीय विश्लेषण की आवश्यकता बनी हुई है, जिसे प्रस्तुत अध्ययन पूरा करने का प्रयास करता है।

Methodology

प्रस्तुत शोध "आधुनिकता के युग में जनजातीय संस्कृति के समक्ष चुनौतियाँ" विषय से संबंधित संकलित तथ्यों के विश्लेषण पर आधारित है। प्रस्तुत शोध कोरबा जिले (छत्तीसगढ़) में निवासरत जनजातियों को लिया गया है।

अध्ययन के लिए 120 उत्तरदाताओं का चुनाव किया गया है प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है अध्ययन मे प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। शोध सामग्री के स्रोतों में पुस्तकों, शोध–पत्रों, जर्नल लेखों, सरकारी रिपोर्टों तथा विश्वसनीय ऑनलाइन अकादमिक स्रोतों को समझना है।

Analysis

आधुनिकता के युग में जनजातीय संस्कृति के समक्ष चुनौतियाँ

जनजातीय समाज भारतीय सामाजिक संरचना का एक महत्वपूर्ण और प्राचीन अंग रहा है। इन समाजों की संस्कृति प्रकृति, परंपरा, सामुदायिक जीवन और आत्मनिर्भरता पर आधारित रही है। किंतु आधुनिकता, औद्योगीकरण, शहरीकरण, शिक्षा, संचार माध्यमों और बाजारवादी अर्थव्यवस्था के विस्तार ने जनजातीय संस्कृति को गहरे रूप में प्रभावित किया है। आधुनिकता ने जहाँ एक ओर विकास के नए अवसर प्रदान किए हैं, वहीं दूसरी ओर इसने जनजातीय संस्कृति के समक्ष अनेक गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं।

1. सांस्कृतिक क्षरण

आधुनिकता के प्रभाव से जनजातीय समाज की पारंपरिक संस्कृति में धीरे–धीरे क्षरण देखने को मिल रहा है। लोकनृत्य, लोकगीत, पारंपरिक वेशभूषा, कला–कौशल, भाषा और धार्मिक अनुष्ठान अब नई पीढ़ी के लिए उतने आकर्षक नहीं रह गए हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली और मीडिया मुख्यधारा की संस्कृति को बढ़ावा देते हैं, जिसके परिणामस्वरूप जनजातीय सांस्कृतिक ज्ञान का पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरण बाधित हो रहा है। इससे सांस्कृतिक निरंतरता टूटने की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

2. अस्मिता का संकट

आधुनिक समाज के संपर्क में आने से जनजातीय युवाओं के समक्ष अपनी पहचान को लेकर गंभीर संकट उत्पन्न हुआ है। मुख्यधारा समाज के जीवन–मूल्यों, पहनावे, भाषा और जीवन–शैली से तुलना के कारण उनमें आत्म–हीनता की भावना विकसित हो रही है। वे अपनी परंपराओं को पिछड़ा या अविकसित मानने लगते हैं। इस पहचान–संकट के कारण जनजातीय युवाओं में सांस्कृतिक आत्म–गौरव में कमी देखी जा रही है, जो दीर्घकाल में उनकी सांस्कृतिक जड़ों को कमजोर करती है।

3. सामाजिक संबंधों में परिवर्तन

परंपरागत जनजातीय समाज सामूहिकता, सहयोग, पारस्परिक सहायता और साझा उत्तरदायित्व पर आधारित रहा है। संयुक्त परिवार प्रणाली और सामुदायिक निर्णय प्रणाली इन समाजों की विशेषता रही है। किंतु आधुनिकता के प्रभाव से व्यक्तिवाद को बढ़ावा मिला है, जिससे पारंपरिक सामाजिक संरचनाएँ कमजोर हुई हैं। रोजगार, शिक्षा और शहरीकरण के कारण परिवारों का विघटन हो रहा है और सामाजिक एकजुटता में कमी आ रही है।

4. औद्योगीकरण और विस्थापन

औद्योगीकरण, खनन, बाँध निर्माण और विकास परियोजनाओं के कारण जनजातीय समुदायों को बड़े पैमाने पर विस्थापन का सामना करना पड़ा है। जनजातीय संस्कृति का भूमि, जंगल और प्राकृतिक संसाधनों से गहरा संबंध होता है। विस्थापन के कारण न केवल उनका आजीविका स्रोत छिनता है, बल्कि उनकी सांस्कृतिक पहचान और पारंपरिक जीवन–शैली भी प्रभावित होती है। इससे सामाजिक अस्थिरता और सांस्कृतिक विघटन की समस्या उत्पन्न होती है।

5. डिजिटल और उपभोक्तावादी प्रभाव

डिजिटल मीडिया, मोबाइल फोन, सोशल मीडिया और बाजारवाद ने जनजातीय जीवन–शैली में तीव्र परिवर्तन लाए हैं। परंपरागत आवश्यकताओं के स्थान पर आधुनिक उपभोक्तावादी वस्तुओं की मांग बढ़ी है। इससे सरल जीवन–शैली के स्थान पर भौतिकतावाद का प्रभाव बढ़ रहा है। डिजिटल माध्यमों के माध्यम से बाहरी संस्कृतियों का प्रभाव तेजी से फैल रहा है, जिससे जनजातीय सांस्कृतिक मूल्यों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

6. भाषा और ज्ञान प्रणाली का ह्रास

जनजातीय भाषाएँ और मौखिक परंपराएँ उनकी सांस्कृतिक पहचान का मूल आधार रही हैं। आधुनिक शिक्षा और प्रशासनिक व्यवस्था में स्थानीय भाषाओं की उपेक्षा के कारण कई जनजातीय भाषाएँ लुप्त होने की कगार पर हैं। इसके साथ ही पारंपरिक औषधीय ज्ञान, पर्यावरणीय ज्ञान और जीवनोपयोगी अनुभव भी धीरे–धीरे समाप्त हो रहे हैं।

आधुनिकता: सकारात्मक आयाम

यह भी सत्य है कि आधुनिकता ने जनजातीय समाज को कुछ सकारात्मक लाभ दिए हैं। शिक्षा के प्रसार से जागरूकता बढ़ी है। स्वास्थ्य, संचार और रोजगार के नए अवसर उपलब्ध हुए हैं। अधिकार–बोध और राजनीतिक चेतना में भी वृद्धि हुई है। अतः आधुनिकता को पूर्णतः नकारात्मक नहीं माना जा सकता।

Conclusion

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि आधुनिकता ने जनजातीय संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया है। यह प्रभाव दोहरा हैकृएक ओर विकास, शिक्षा और जागरूकता के नए अवसर उपलब्ध हुए हैं, वहीं दूसरी ओर सांस्कृतिक क्षरण, अस्मिता संकट और सामाजिक विघटन जैसी गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। आवश्यकता इस बात की है कि विकास की प्रक्रिया को सांस्कृतिक संवेदनशीलता के साथ आगे बढ़ाया जाए। जनजातीय संस्कृति का संरक्षण केवल अतीत की विरासत को बचाने का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह सामाजिक विविधता और समावेशी विकास की अनिवार्य शर्त है।

References

Betel, A. (2018). Bharat mein samaj aur samajik parivartan. Oxford University Press.

Bharat Sarkar. (2022). Janjatiya vikas report. Janjatiya Karya Mantralaya.

Kujur, R. evam Minz, N. (2020). Audyogikaran ka janjatiya sanskriti par prabhav. *Indian Journal of Social Research, 61*(2), 245–260.

Sahoo, P. (2021). Digital media aur janjatiya yuva. Journal of Tribal Studies, *8*(1), 33–48.

Xaxa, V. (2019). Bharat mein janajatiyan aur vikas. Oxford University Press.